Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai
Name - Dr. Bhanti Kumari (G.T)
Deptt - AIHC
Lession plan - B.A AIHC (H), Part - I, Paper - 1
Date - 09 - 04 - 2021
Name of the Topic - Comparision with Mohammud Ghaghnavi & Ghori

भारतीय इतिहास में महमूद गजनवी एवं मुहम्मद गोरी का तुलनात्मक अध्ययन :—

भारत पर आक्रमणकारियों के रूप में जिन लोगों ने भारतीय इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है, उनमें महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी प्रमुख है। इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन हम इस प्रकार कर सकते हैं।

(1) प्रारंभिक परिस्थितियों में अन्तर
(2) शिक्षा तथा शारीरिक गुणों में अन्तर
(3) पराक्रम एवं साहस के आधार पर अन्तर
(4) आक्रमण के उद्देश्यों में अन्तर
(5) राज्य प्रसार सम्बंधी अन्तर
(6) दूरदर्शिता सम्बंधी अन्तर

(1) प्रारंभिक परिस्थितियों में अन्तर

महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी, दोनों की प्रारंभिक परिस्थितियों में काफी अन्तर था।। सिंहासनारूढ़ होने के साथ ही महमूद को अपने पिता का विशाल साम्राज्य तथा अन्य अनेक साधन प्राप्त हुए थे, जो उसकी महत्वाकांक्षा की पूर्ति में अच्छी सहायता दे सकते थे; किन्तु मुहम्मद गोरी ऐसी सुविधाओं एवं उपकरणों से सर्वथा वंचित था। उसने थोड़े साधनों के आधार पर ही इतनी बड़ी सफलता प्राप्त की थी।

P.T.O.

② शिक्षा तथा शारीरिक गुणों में अंतर →

मुहम्मद गोरी सुन्दर और शिक्षित था, पर विद्यानुरागी और विद्वानों के आश्रयदाता के रूप में वह महमूद के समक्ष बौना दिखाई पड़ता था। महमूद गजनवी कुरूप और अशिक्षित था, किन्तु उसे विद्या से अनन्य प्रेम था। उसका सुन्दर दरबार-दूर-दूर के दिग्गज विद्वानों से अलंकृत रहता था अलबरूनी, उत्बी, बैहाकी, फिरदौसी जैसे विद्वानों से उसका दरबार जगमगाता रहता था। इसी प्रकार स्वयं असुन्दर होते हुए भी महमूद सौन्दर्य का महान प्रेमी था। उसके इस सौन्दर्य प्रेम का ही परिणाम था कि उसके समय का गजनी इस्लामी संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ नगर बन गया था।

③ पराक्रम एवं साहस के आधार पर अन्तर →

महमूद गोरी एवं महमूद दोनों ही पराक्रमी और साहसी थे। दोनों ही महत्वाकांक्षी एवं निर्भीक थे; किन्तु मुहम्मद गोरी में वह सामरिक प्रतिभा नहीं थी जो कि महमूद में थी। महमूद ने भारत को सत्रह बार पदाक्रांत किया था, इनमें से एक भी बार उसे नतमस्तक नहीं होना पड़ा इसके विपरीत मुहम्मद गोरी ने इससे कम आक्रमण किये फिर भी वह एक बार गुजरात तथा एक बार तराईन में बुरी तरह पराजित हुआ। इस प्रकार एक सेनापति तथा सैन्य संचालक एवं संगठन के रूप में महमूद गजनवी मुहम्मद गोरी से कहीं-अधिक योग्य था।

④ आक्रमणों के उद्देश्यों में अन्तर :-

मुहम्मद गोरी एक लालची, पिपासु तथा विश्वासघाती था। उसके भारतीय आक्रमणों पर एक दृष्टि डालने से हमें पता चल जाता है कि अपने हित साधन के लिए वह नीच से नीच कार्य

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कानों में लेशमात्र भी हिचकता नहीं था। अच्छा की रानी तथा लाहौर के मलिक खुसाव के साथ किया गया व्यवहार उसके जीवन भर उसके जीवन पर बड़ा भारी धब्बा रहेगा। पृथ्वीराज चौहान पर भी सन -1192 ई॰ में तराइन के दूसरे युद्ध में उसने धोखे से आक्रमण किया था पहले तो उसने यह कहा था कि वह अपने भाई के आने के बाद ही युद्ध प्रारंभ करेगा। उसकी इस घोषणा से राजपूत सैनिक शिथिल हो गये। उन्होंने मुहम्मद गोरी की घोषणा को सच्ची मान लिया परंतु अगले दिन सूर्य निकले ही मुहम्मद गोरी ने अचानक राजपूत फौज पर हमला कर दिया परंतु महमूद ने विश्वासघात का आवरण नहीं ओढ़ा। उसकी विजय हुई एक कुशल युद्ध विन्यास और अनुभवी सैन्य संचालन के बल पर होती थी। महमूद गजनवी के आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य धन प्राप्त करना था, जबकि मुहम्मद गोरी के आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना करना था।

⑤ राज्य प्रसार सम्बन्धी अन्तर :—

यह सत्य है कि भारत में मुहम्मद गोरी का राज्य गजनी के राज्य से कहीं अधिक विस्तृत था, किन्तु मध्य एशिया में महमूद का राज्य मुहम्मद के राज्य से कहीं विशाल था। महमूद की विजय अधिक व्यापक थी। उसके साम्राज्य में ईरान, ईराक, तथा मध्य एशिया का विशाल भाग तथा पंजाब, मुल्तान व सिन्ध सम्मिलित थे। यह सब कुछ होते हुए भी कितनी ही बातों में मुहम्मद महमूद से आगे बढ़ा हुआ था।

⑥ दूरदर्शिता सम्बन्धी अन्तर :—

महमूद की अपेक्षा मुहम्मद एक अधिक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। भारत की तत्कालीन राजनीतिक दशा को अच्छी तरह समझ कर उसने भारत विजय की एक निश्चित एवं सुश्रृंखल योजना

P.T.O.

बनाई तथा उनको कार्यान्वित किया। परन्तु महमूद में इस राजनीतिक दूरदर्शिता का सर्वथा अभाव था। मुहम्मद की राजनीतिक दूरदर्शिता का ही यह फल था कि उसने भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना की। महमूद के आक्रमणों का उद्देश्य कुछ दूसरा था। उसका तो एकमात्र उद्देश्य भारत की अपार धनराशि को लूटकर गजनी के राजकोष को सम्पन्न करना था।

इस प्रकार जहाँ तक राजनीतिक दूरदर्शिता का प्रश्न है मुहम्मद महमूद से कहीं आगे था। यह सत्य है कि न तो महमूद ने ही राजनीतिक संगठन में किसी नवीनता का सृजन किया और न मुहम्मद ने। किन्तु मुहम्मद में योग्य व्यक्तियों के चयन करने की अद्भुत प्रतिभा थी। उसने भारत विजय करने के पश्चात् अपने अधिकृत प्रदेशों को ऐसे योग्य उत्तराधिकारियों के हाथ में सौंप दिया जिन्होंने भारत में इस्लाम की विजयपताका दीर्घकाल तक फहराए रखी।

भारती कुमारी
A.I.H. 2C
09-04-2021